: पंचम अध्याय :

# "विवेच्य उपन्यासों में चित्रित प्रमुख स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन"

## :पंचम अध्याय :

# ``विवेच्य उपन्यासों में चित्रित प्रमुख स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन``

प्रस्तुत अध्याय में अज्ञेय के उपन्यासों में स्थित प्रमुख-स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण किया जाएगा। `शेखर : एक जीवनी` की शशि `नदी के द्वीप` की रेखा और गौरा तथा `अपने-अपने अजनबी` की सेल्मा और योके आदि प्रमुख स्त्री पात्र दिखायी देते हैं। अत: इनके चरित्र का चित्रण करना यहाँ क्रमप्राप्त होगा। अज्ञये के उपन्यासों में स्त्री पात्रों का जो स्वरुप हमारे सामने आता है वह एक विशिष्ट, संभ्रांत, स्वतंत्र आधुनिक नारी का है। अज्ञेय के व्यक्ति और रचना का इन दोनों में जो संस्कार और चरित्रगत पृष्ठभूमियाँ है उन सबका प्रतिबिंब इन स्त्री पात्रों के स्वरुप पर प्रकट है। समस्त स्त्री-पात्र व्यक्तित्त्ववान है, उनकी अपनी सभी की अलग- अलग सत्ता है, अपना अलग-अलग सौंदर्यबोध है और अंतत: सब अपनी-अपनी वेदना और अपने-अपने जीवन की गहनता के साक्षी है। कभी स्त्री पात्रों का जितना स्वरुप हमारे सामने प्रकट होकर आता है उससे कहीं अधिक वे अपने व्यक्तित्त्व का आभास और संकेत देकर जाती है। सब अपनी चरित्रगत विशेषताओं से मन पर ऐसी अमिट छाप छोड़कर जाती हैं कि उनके अतीत और उनके भविष्य के बारे में हम सोचने को बाध्य होते हैं। अज्ञयेजी के स्त्री पात्रों के संबंध में डॉ. विमल सहस्त्रबुद्धे लिखती हैं - ``सारे प्रतिनिधि स्त्री पात्र अन्य उपन्यासकारों की दृष्टि से बहुत थोडे हैं। (तीन उपन्यासों में केवल पाँच हैं।) किंतु इनकी संख्या जितनी ही कम है उतने ही ये अधिक संश्लिष्ट हैं, अनन्य हैं। इनमें जितना ही अधिक मोहक तत्त्व है उतना ही अधिक इनमें अंतर्विरोधी तत्त्व भी है।``[1] यहाँ पर- हम अज्ञये के उपन्यासों की प्रमुख स्त्री पात्रों का विवेचन-विश्लेषण करते हैं -

### 5.1 शशि :-

अज्ञेय कृत `शेखर : एक जीवनी` उपन्यास की शशि प्रमुख स्त्री पात्र है। वह शेखर की मौसी विद्यावती की बेटी है। नायक शेखर में जो भी अच्छाइयाँ पायी जाती है वह शशि की बदौलत ही हैं। भटके हुए शेखर को मंजिल की ओर पहुँचाने के लिए शशि अपना आत्मोत्सर्ग तक कर देती है। इसके साथ-साथ वह अपने व्यक्तित्त्व में विवेक और अनुराग भी बनाए रखती है। अंत में शेखर की प्रेरणा बनकर

वह पाठकों के सामने प्रस्तुत होती है। शशि की मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ इसप्रकार हैं-

### 5.1.1 प्रतीक रूप में शशि :-

अज्ञेयजी ने शशि नाम का प्रतीक अर्थ में प्रयोग किया है। शशि अर्थात चंद्र और चंद्र रात के घने अंधेरे में निकलता है और भूले-भटके राही को मंजिल दिखाता है। अपनी शितलता से उसकी तृप्ति करता है लेकिन इतना कुछ करने के बाद भी उसपर जो कलंक है वह दूर नहीं हुआ, वह आजीवन लगा ही रहा है। उसी प्रकार शशि भी अपना सबकुछ लुटाकर, असंख्य यातनाओं को सहकर शेखर को बड़ा होता हुआ देखना चाहती है। उसे भटकने से बचाकर मंजिल की ओर अग्रेसर करती है। इधर रामेश्वर से विवाह करके उसे अपना सर्वस्व दे देती है। इसप्रकार वह अपने जीवन को जलाकर सभी को उजाला देती है, फिर भी उसे कलंकित ही जीवन बिताना पड़ता है। इस रूप में उसके व्यक्तित्त्व में प्रतीक अर्थ विद्यमान है।

### 5.1.2 आत्मोत्सर्ग की साक्षात प्रतिमूर्ति :-

शशि अपने बल पर शेखर के अहं का परिष्कार करती है और उसके विद्रोही स्वभाव को सही मार्ग पर लाने में समर्थ होती है। यह उसकी चरित्र की महत्ता का ज्वलंत प्रमाण है। वह मानो अपने जीवन का सूत्र इन शब्दों में प्रकट करती है- ``दुःख उसकी आत्मा को शुद्ध करता है जो उसे दूर करने की कोशिश करता है। शुद्धि दूसरे के साथ दुखी होने में वही, दूसरे के स्थान पर दुखी होने में है।``[2] शशि के दुख ने शेखर को विचलित किया और शशि के उत्सर्ग ने उसके अहं का परिष्कार। इस तथ्य को शेखर अपने शब्दों में यों स्वीकारता है - ``शशि, शक्ति मेरे पास रही है, पर मैंने उसे जाना नहीं, आजीवन मैं विद्रोही रहा हूँ पर बराबर मैं अपनी विद्रोही शक्ति को व्यर्थ बिखेरता रहा हूँ। शशि विवाहिता है, साथ ही प्रेमिका भी। उसमें अनुराग और त्याग दोनों गुण मौजूद हैं। वह प्रेरक शक्ति है और है स्फूर्तिदायिनी। वह सहृदया है और है विदुषी भी। वह शेखर से प्रेम करती है पर अपनी माँ की मानरक्षा में स्वेच्छा से अनचाहे व्यक्ति के साथ विवाह-बंधन को स्वीकार कर लेती है। इस प्रकार वह कर्तव्यपरायणा है। वह अपने पति का दुर्व्यवहार सहन करती है और अपनी पिटाई भी सहती है। अत: उसकी आत्मपीडा स्पष्ट होती है। उसका विश्वास है कि किसी को बनाने में एक का मिटना आवश्यक होता है। अत: कहती है - ``स्त्री हमेशा से अपने को मिटाती आई हैं ----मैं अपने को मिटा रही हूँ --- जिस शेखर को मैं देखती हूँ उसके बनाने में

मेरा बराबर का साझा होगा।``[3] यहाँ पर प्रस्तुत उद्धरण से आत्मोत्सर्ग के सभी गुण शशि में परिलक्षित होते हैं।

**5.1.3 विवेक और अनुराग की भावना :-**

शशि के चरित्र की प्रमुख विशेषता यह है कि उसमें शेखर के प्रति अनुराग भाव तो है ही, लेकिन उसके मन में विवेक भी प्रचुर मात्रा में है। वह शेखर को चाहती तो है लेकिन जब उसके घर में उसकी शादी का फैसला होता है तब वह इस विवाह से इंकार नहीं करती। वह नहीं चाहती कि उसके कारण गृहस्थी टूटे या माँ को समाज के तानों का शिकार होना पडे। इसी कारण वह शादी के प्रस्ताव को स्वीकृति दे देती है। वह यही सोचती है कि ---``माँ विधवा है, फिर उसके अपने संस्कार हैं। मेरी अस्वीकृति समाज के सम्मुख उनकी क्या अवस्था करेगी।---मैं अपना युद्ध लड़ सकती हूँ, पर मुझे क्या अधिकार है, मैं उनसे अपना युद्ध लडवाऊँ ? और अगर किसी को मूक होकर जलना ही है, तो वह कोई मैं ही क्यों नहीं होऊँ ?``[4] यहाँ पर उसके अनुराग से भी बढकर विवेक ही दिखायी देता है। विवेक उसके समुचे जीवन में कूट-कूटकर भरा है लेकिन उसके विवेक में व्यथा है क्योंकि वह विवेक के कारण खुद दुःख सहती है। अपने व्यथा भरे पत्र में वह शेखर को लिखती है - ``आज मेरी उस अवस्था का अंतिम दिन है, जिसमें अपने आत्मियों से अलग एक संबंध मेरा था- मेरे बहिनापे में घिरे हुए तुम ! कल से मेरा पहला परिचय होगा, अमुक की स्त्री, और सब संबंध उसके बाद आयेंगे ---और जो आज स पद से अंतिम बार तुम्हें प्रणाम करती हूँ।``[5] यहाँ पर शशि की कुमारी अवस्था समाप्त होती है किंतु सही माने में यही से उसके अनुराग और विवेक की शक्तिसरिता प्रारंभ होती है। वह द्विधावस्था में उलझी हुई है क्योंकि वह नहीं चाहती कि शेखर से उसका अनुबंध टूटे और वह यह भी नहीं चाहती कि पति के साथ उसकी गृहस्थी टूटे। शेखर के साथ अनुराग होने के कारण वह पति के साथ कभी भी बूरा व्यवहार नहीं करती बल्कि उसे अपना सबकुछ स्वेच्छा से दे देती है। वह शेखर की भी प्रेरणा बनती है। डॉ. विमल सहस्त्रबुद्धे शशि के संदर्भ में लिखती हैं - ``शशि का अनुराग शेखर के लिए प्रक्रिया के रूप में है। वासना के प्रतीक के रूप में नहीं। विवेक और अनुराग का संमिश्रण उसके विचारों में मिलता है। उसका विवेक और अनुराग शेखर की दुर्बलता के रूप में नहीं बल्कि उसकी शक्ति और प्रेरणा स्त्रोत के रूप में परिणत होती है।``[6] उसके मन में हमेशा यही भय रहता है कि शेखर अपना जीवन व्यर्थ न गवाँ दे। इसी कारण वह जीवन के अंतिम क्षणों तक अपने अनुराग

एवं विवेक को बनाए रखती है।

### 5.1.4 शारीरिक और मानसिक यातनाओं की शिकार :-

शशि उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक शारीरिक और मानसिक यातनाएँ भोगती हुई दिखाई देती है। शेखर के साथ प्यार करके भी वह अपनी मर्जी से विवाह नहीं कर सकती, बल्कि समाज भय के कारण रामेश्वर जैसे अभद्र पति के साथ उसे विवाह करना पड़ता है। शेखर की याद उसे हर पल सताती है। शेखर के दूर जाने के पश्चात तो उसका मानसिक संघर्ष बढ़ता ही जाता है। उसका पति शक्की होने के कारण उसका वैवाहिक जीवन भी दु:खमय ही है। फिर भी वह किसी के सामने अपना दु:ख प्रकट नहीं करती, बल्कि अंदर ही अंदर घूटती जाती है। शेखर के प्रति अनुराग रखने से उसका पति उसे मार-पिटकर घर से निकाल देता है। साथ ही वह उसके पेट में ऐसी लात जमाता है कि उसका गुर्दा ही फट जाता है। परिणामत: शशि को अंत तक शारीरिक यातनाओं का शिकार होना पड़ता है। उपर से पति उसे गाली-गलौच कर अपमानित करता है। शशि इस व्यवहार से पूरी तरह से टूट जाती है। वह शेखर की स्थिति अवगत होने के कारण अपना दु:ख चुपचाप सहती जाती है। पास-पडोस के लोग भी उसे शक की नजर से देखते हैं। इस तरह उसे शेखर को छोड़कर घरवाले तथा बाहरवालों की यातनाओं का शिाकर होना पड़ता है। एक दिन सभा मंच पर वह बेहोश हो जाती है तब किसी तरह शेखर उसे संभाल लेता है। शशि मन में धधकती ज्वालामुखी रूपी वेदना को कभी-कभी एकांत में दर्द भरे गीत गाकर कम करने का प्रयास करती है। उसे लगता है कि उसके कारण ही शेखर की गति अवरूद्ध हो रही है। अत: वह उससे भी दूर जाने की सोचती है। इस प्रकार वह अपनी समस्त वेदनाओं को छिपाकर घूट-घूट कर ही अपने जीवन का अंत करती है। इसी से उसके त्यागमयी भारतीय नारी का जीवन-चित्र स्पष्ट रूप से प्रकट होता है।

### 5.1.5 कर्तव्यपरायणा :-

शशि बचपन से लेकर अंत तक एक कर्तव्यपारायण नारी के रूप में ही हमारे सामने प्रस्तुत है। वह अपने कर्तव्यों को भली-भाँति समझती है। बचपन में ही झूठ बोलकर शेखर को पिटने से बचानेवाली शशि आगे परीक्षा के लिए लाहौर आए शेखर की पूरी तरह से देखभाल खुद करती है। शेखर की मानसिक स्थिति को वह जानती है और उसे तसल्ली देने के लिए दो बार शेखर से मिलने जेल में भी

जाती है। माँ शशि का विवाह तय कर देती है। उसकी इच्छा न होते हुए भी रामेश्वर के साथ विवाह करती है। इसप्रकार माँ और समाज के खातीर वह अपनी जिंदगी का होम कर देती है। विवाह के बाद भी वह मुक रहकर ही सारे दु:खों, संकटों को झेलती है। शेखर जेल से छूटकर आनेपर शशि जानती है कि उसे अच्छे साथी और मार्गदर्शन की जरूरत है। शेखर कहीं भटक न जाए इसीलिए उसकी प्रेरणा बनकर एक अच्छा साहित्यकार बनने के लिए उसे प्रेरित करती है। आदि सभी कार्य शशि के कर्तव्यपरायणता के द्योतक हैं। इस प्रकार से वह कर्तव्यों के प्रति पूर्णत: सजग दिखायी देती है। उसके हर विचार से, व्यवहार से उसकी कर्तव्यपरायणता ही दृष्टिगोचर होती है।

**5.1.6 प्रेरणादायी :-**

शशि कुंठित शेखर के लिए प्रेरणा के रूप में ही संपूर्ण उपन्यास में व्याप्त है। शेखर जीवन की वास्तविकता से बहुत दूर भागा हुआ पात्र है। फिर भी उसे सही राह दिखाने का काम शशि करती है। अगर शशि नहीं होती तो शेखर का जीवन जीवन ही नहीं होता। इसी कारण जब वह फाँसी के तक्ते पर खड़ा होता है तो उसे सबसे पहले शशि की ही याद आती है और शशि से अपनी कृतज्ञता वह इन शब्दों में व्यक्त करता है ----``सबसे पहले तुम शशि। इसीलिए नहीं कि तुम जीवन में सबसे पहले आयीं या कि तुम सबसे ताजी स्मृति हो। इसीलिए कि मेरा होना अनिवार्य रूप से तुम्हारे होने को लेकर है - ठीक वैसे ही जैसे तलवार में धार का होना सान की पूर्वकल्पना करता है। तुम वह सान रही हो जिस पर मेरा जीवन बीराबर चढ़ाया जाकर तेज होता रहा- जिस पर मँज-मँज कर मैं कुछ बना हूँ जो संसार के आगे खड़ा होने में लज्जित नहीं है।``[7] इस कथन से ही स्पष्ट होता है कि शेखर का होना न होना सिर्फ शशि की बदौलत ही है। शेखर बी.ए. के बाद छुट्टी में शशि के घर आता है। तब वह पूरी तरह से समाज से कटा हुआ है। वह आगे की पढ़ाई नहीं करना चाहता है। तब शशि उसे समझाती है और आगे एम.ए. में दाखिल होने को कहती है। आगे स्वतंत्रता आंदोलन में जब शेखर को जेल की सजा होती है तब शशि उसे मिलने भी जाती है। अनिच्छा होते हुए भी सभी की खुशी के लिए शशि अपना विवाह कर लेती है। जब शेखर जेल से छूटता है तो सबसे पहले शशि से मिलने उसके घर जाता है। शशि शेखर के उलझे हुए मन को जानती है। इसी कारण उसकी उलझन कम करने के लिए उसे कुछ तो करने के लिए प्रेरित करती हुई नजर आती है। वह शेखर से मिलने कई बार उसके पास भी जाती है। शशि शेखर को सबसे ऊँचे व्यक्ति के रूप में देखना

चाहती है। इसीलिए अपनी वैवाहिक जीवन की परंपरा का निर्वाह करते हुए भी वह अपनी पूरी शक्ति शेखर के विकास में ही लगा देती है। इस प्रकार शशि शेखर के लिए प्रेरणादायिनी के रूप में उभर आती है।

### 5.1.7 मानसिक उलझन :-

शशि बहन से बढकर एक प्रेयसी के रूप में सफल हुई है। इसका मनोवैज्ञानिक कारण है-युवावस्था से ही शशि और शेखर एक-दूसरे से आकर्षित हैं। शशि को शेखर द्वारा `बहनजी' कहना अच्छा नहीं लगता। वह खुद को उससे छोटी मानती है। शेखर भी शशि को चाहने लगता है। जेल में जब शशि शेखर से मिलने जाती है तो शेखर को भाई की उपस्थिति के कारण कुछ बोल नहीं पाती। शेखर को भी जेल में बार-बार शशि की ही याद सताती है। शेखर पर आसक्त शशि दूसरी जगह विवाह के लिए अनिच्छा प्रकट करती है और वह शेखर से सलाह भी माँगती है। शेखर सही सलाह देता है तो उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए शशि शादी का प्रस्ताव स्वीकार करती है। इसप्रकार मन में शेखर का प्यार लिए ही वह रामेश्वर से विवाहबद्ध होती है लेकिन विवाह के बाद भी उसका शेखर के प्रति प्यार बढने ही लगता है। वह शेखर को सबसे ऊँचे आदमी के रूप में देखना चाहती है। कभी शेखर उससे मिलने आता है तो कभी वह शेखर से मिलने जाती है। धीरे-धीरे शेखर भी हर समय उसके बारे में सोचने लगता है। शशि का प्रेम उदात्त है। इस रूप में वह बह से बढ़कर प्रेमिका के रूप में ही हमारे सामने प्रस्तुत होती है।

शशि के चरित्र-चित्रण का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के पश्चात हम संक्षेप में कह सकते हैं कि शशि की आत्मोत्सर्ग की प्रतिमूर्ति, विवेकी और अनुरागिनी, शारीरिक और मानसिक यातनाओं की शिकार, कर्तव्यपरायणा, प्रेरणादायी, बहन, बनाय प्रेमिका आदि विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं।

## 5.2 रेखा :-

अज्ञेय कृत `नदी के द्वीप' की रेखा विशेष पात्र है। उसके सामने उपन्यास के अन्य पात्र निस्तेज जान पड़ते हैं। आलोचक उसे अद्वीतिय कोटि के पात्र में रखते हैं। संवेदनशील, सजग, गौरवमयी फिर आधुनिक नारी के रूप में हिंदी साहित्य में रेखा के सिवा अन्य पात्र हो ही नहीं सकता। पढ़ी-लिखी बौद्धिक क्षमता से युक्त 27 वर्ष की नवयुवती- रेखा का दांपत्य जीवन विषाक्त है। पति से दूर रहकर वह

आत्मनिर्भयता का जीवन जी रही है। तभी उसकी भेंट भुवन से होती है। वह भुवन को चाहने लगती है। निराशा और अतृप्ति की शिकार रेखा भुवन के प्रेम को वरदान समझकर ग्रहण करती है। उसमें किसी प्रकार की कुंठा, लोकलज्जा या भय नहीं है। अपनी संवेदना के प्रति वह पूर्णत: ईमानदार है। रेखा का त्यागमयी एवं उदात्त दृष्टिकोण, आत्मनिर्भयता उसे प्रभावशाली व्यक्तित्त्व के रूप में प्रस्थापित करता है। उसकी मनोवैज्ञनिक चारित्रिक विशेषताओं को इस रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

**5.2.1 प्रतीक अर्थ में रेखा :-**

अज्ञेय जी ने अन्य स्त्री पात्रों को प्रतीक रूप में जिसप्रकार अभिव्यक्ति प्रदान की है उसी प्रकार रेखा को भी प्रतीक अर्थ में प्रस्तुत किया है। उन्होंने रेखा नामकरण ही प्रतीकात्मक किया है। रेखा बिंदू की गतिशील अभिव्यक्ति है। उसमें न मोटाई है, न चौडाई, वह मात्र अस्तित्व है, सत्ता है, उपाधिरहित सत्ता। किसी भी विश्लेषण से हम उसे बाँध नहीं सकते। अगर वह बंध गई तो वह गतिशील नहीं होगी और इसीलिए वह मात्र सत्ता की भूमि पर सभी से अलग एक अस्तित्व बनाती है। इसी रूप में उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक रेखा हमारे सम्मुख विद्‌यमान हैं।

**5.2.2 त्यागमयी एवं उदात्त प्रेमिका :-**

रेखा का प्रेम उदात्त है। वह एक त्याग की प्रतिमूर्ति के रूप में हमारे सम्मुख प्रस्तुत होती है। रेखा का क्षण के प्रति समर्पण अपनी भावनाओं के प्रति उसके ईमानदारी को व्यक्त करता है। जीवन के अनुभूतिपूर्ण क्षणों को वह पूरी सहजता के साथ भोगती है। भुवन के साथ उसके दिल के तार जुड जाते हैं। इसीलिए वह उसके लिए बडे से बडा त्याग करने के लिए प्रस्तुत है। चंद्रमाधव से उसका हृदय नहीं जुड पाता, इसीलिए उसका संपर्क कभी भी आंतरिक नहीं पाया। रेखा का प्रेम उदात्त है और त्याग की आधारशीला पर अवस्थित है। भुवन से आत्मिक, मानसिक और शारीरिक तृप्ति पार करके भी रेखा भुवन को विवाह के सामाजिक दायित्व में बाँधकर उसके भविष्य को सीमित नहीं करना चाहती है। भुवन के प्रति गौरा के प्यार का संकेत मिलते ही वह बिना किसी ईर्ष्या के गौरा के लिए पथ प्रशस्त कर देती है। दूसरी नारी होती तो ईर्ष्या और द्‌वेष की आग में जलकर राख हो जाती और भुवन को किसी शर्त पर न छोडती, खास कर तब कि वह गर्भवती भी होती है लेकिन रेखा का प्रेम राग, द्‌वेष से परे उदात्त है। वह हमेशा भुवन और

गौरा के हित में ही सोचती है। इससे उसका त्याग हमारे सम्मुख खड़ा होता है। वह भुवन के संदर्भ में यों सोचती है - ``जो सुंदर है, निरंतर विकास करता है, रूक नहीं सकता, दूसरों को आनंद देता है। तो क्या मैं भूल करती आयी हूँ, क्या मैं बहते पानी को बाँधना चाहती आयी हूँ, क्या मैंने दूसरों के लिए दुःख ही की सृष्टि की है ? अगर ऐसा है तो उसका भरपूर दंड मुझे मिले- विधि से और तुमसे भी--- दूसरों के लिए मैंने दुःख नहीं बोया ---मैं धारे बैठी हूँ कि यह दर्द भी आगे आनंद देगा क्योंकि वह विश्वास के साथ अपनाया गया है, मैं अपने को समर्पित करके उसे ले रहूँ --- इसीलिए तुम भवन चले जाना। मैं शिकायत नहीं करूँगी, मन में भी नहीं। मान लुँगी कि मेरा व्रत पूरा हुआ - कि मैंने तुम्हे वही दिया जो देय था और उससे बचा लिया जिससे तुम्हें रखना चाहती थी।``[8] इससे रेखा की उदारता ही स्पष्ट रूप में झलकती है।

### 5.2.3 संघर्ष की भावना :-

रेखा स्वतंत्र नारी होते हुए भी उसे हमेशा अपने जीवन में संघर्षरत रहना पढता है। वह विवाहिता है फिर भी दुर्भाग्य से नारीत्व की अभिव्यक्ति का अवसर उसे नहीं मिला। पति हेमेंद्र में विकृति होने के कारण वह उससे अलग हो जाती है। अपनी चिर अतृप्ति की आग लिए वह प्यासे ह्रदय से भटकती है और स्वतंत्र होती है। उस स्वतंत्रता में तेजोमय व्यक्तित्च पर बौद्धिकता की छाप है और एक कड़ा रिजर्व। स्वतंत्रता के कारण और अकेले होने के कारण नौकरी करती है और सफर करती रहती है।

सुशिक्षित डॉक्टर भुवन में उसे अपने स्त्रीत्व के तृप्ति की संभवना दीखती है और वह उसके पीछे एक नदी की धारा के समान बहती जाती है। जहाँ- जहाँ मौका मिला वहाँ उसके साथ हो लेती है और एक दिन तुलियन झील में उसकी मनोकामना तृप्त होती है। वह स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती रहती है, परंतु किसी अपने को बाँधना नहीं चाहती। भुवन के साथ उसके विवाह का प्रस्ताव उसके बौद्धिक मन में संघर्ष पैदा करता है। यह प्रस्ताव परिस्थिति के कारण हुआ है। इस संदर्भ में वह सोचती है - ``जो हुआ है वह न हुआ होता तो वह न माँगते न कहते, इसीलिए उनका कहना परिणाम है। और यह कहना परिणाम नहीं, कारण होना चाहिए, तभी मान्य-तभी उस पर विचार हो सकता है।``[9] इसप्रकार वह हमेशा अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत रहती है। रेखा ही एक ऐसी पात्र है जो पूरे उपन्यास में आरंभ से लेकर अंत तक संघर्षरत रहती है फिर भी वह स्वतंत्रता को संजोए रखती है।

### 5.2.4 संवेदनशील नारी :-

रेखा के संस्कार अत्यंत शालीन रुप में हमें मिलते हैं। वह उच्च्व मध्यवर्ग की नारी है। उसका व्यक्तित्व शुरू से ही परिपक्व है, उसके चरित्र में तेज धार आयी है। रेखा का युद्ध परिस्थिति से है। यह युद्ध संस्कार के नाते प्राप्त करता है। उसके आत्मसंस्कार न भुवन को ग्रसित करते हैं न गौरा को। रेखा भुवन से अलग होकर स्वत: पूर्ण रहती और संतुष्ट भी। अपने संस्कार एवं संवेदना संबंधी रेखा का कथन द्रष्टव्य है कि----``मैं शांत हूँ जो भावनाएँ मुझे तोडती, मरोडती चिथडे करके रख देती थी, अब मुझे छूती तक नहीं और यह नहीं कि मैं हृदयहीन हो गयी हूँ, संवेदन शून्य हो गई हूँ- नहीं, मैं अधिक संवेदनशील भी हूँ, पर अधिक अनासक्त भी।``[10] वस्तुत: रेखा ने अपने संस्कार के बल से भावुकता को जीत लिया है। रेखा के चरित्र में संस्कार का सद्रूप है। संस्कार ने उसके व्यक्तित्व को उदात्तीकृत रूप दे दिया है। आयी हुई परिस्थिति को भी वह प्राप्त करती है और धारा की तरह छोड भी देती है। अपने संस्कारों एवं संवेदना के फलस्वरुप वह डॉ. भुवन को कहती है - ``बरसो मैं श्रीमती हेमेंद्र कहलायी, उसके क्या अर्थ है ? अब अगले महीने से श्रीमती रमेश कहलाऊँगी---उसके भी क्या अर्थ है ? कुछ अर्थ तो होंगे, अपने से कहती हूँ, पर क्या यह नहीं सोच पाती ---मैं इतना ही सोच पाती हूँ कि मेरे लिए यह समूचा श्रीमतित्व मिथ्या है, कि मैं तुम्हारी हूँ, केवल तुम्हारी तुम्हारी ही हुई हूँ और किसी की कभी नहीं, न कभी हो सकूँगी ---।``[11] आगे चलकर उसका संस्कार कृतज्ञ होकर आगे बढ जाता है और वेदनामयी प्रक्रिया में अकेली बन जाती है। इससे स्पष्ट है कि वह एक संस्कारशील एवं संवेदनशील नारी है।

### 5.2.5 प्रभावशाली व्यक्तित्त्व :-

रेखा का व्यक्तित्त्व शारीरिक मानसिक दृष्टि से बहुत ही प्रभावी है। यही कारण है कि वह उपन्यास के हर-एक पात्र पर हावी है। अज्ञेय के हाथों रेखा का व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली बन गया है --- इतना प्रभावशाली कि उसकी चमक के सामने अन्य पात्र निस्तेज और निष्क्रिय हो गए हैं। रेखा के व्यक्तित्त्व में भावप्रवणता, बौद्धिकता और आत्मसजगता है, जिसके कारण वह उपन्यास का सबसे अधिक सजीव पात्र है। रेखा के व्यक्तित्व को हटा दें तो `नदी के द्वीप` निष्प्राण हो जाएगा। रेखा को कुंठाग्रस्त नारी के रूप में देखना दृष्टिदोष का परिचायक है। गंभीरतापूर्वक विचार करें तो रेखा में प्रखर अग्निकुंड हैं

जो निष्ठुर मानवद्रोही सामाजिक व्यवस्था को भस्मीभूत कर डालना चाहती है। रेखा के विद्रोही स्वरुप को ठीक से आत्मसात न कर पाने के कारण समीक्षक गण उसे `बदनाम आधुनिका` के रूप में प्रस्थापीत करेंगे लेकिन रेखा का व्यक्तित्त्व इतना भव्य, उदात्त एवं परिपूर्ण है कि बडी- बडी आधुनिकाएँ उसके पैर की धोवन भी नहीं है। रेखा की गणना हिंदी साहित्य के स्मरणीय अमर चरित्रों में की जानी चाहिए।

रेखा की चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन करने के पश्चात हम कह सकते हैं कि रेखा एक संवेदनशील एवं प्रभावी व्यक्तित्त्व का प्रतिनिधित्व करनेवाली स्त्री पात्र है। रेखा पुरूष-प्रधान संस्कृति की अन्यायकारक बेडियाँ काटकर अपनी मर्जी के अनुसार स्वच्छंदी जीवन जीने की प्रेरणा देनेवाला स्त्री पात्र है। सच ही हिंदी- साहित्य के प्रभावशाली नारी पात्रों में रेखा का नाम निश्चित ही गीना जाता है।

## 5.3 गौरा :-

`नदी के द्वीप` की अन्य प्रमुख स्त्री पात्रों में गौरा एक हैं। वह संपन्न परिवार की इकलौती संतान है। उपन्यास में पहली बार गौरा दो चोटियाँ गूंथ कर फ्राक पहने स्कूल जानेवाली बालिका के रूप में दिखाई देती है। अंतिम बार उसके दर्शन एक संगीत-शिक्षिका के रूप में होते हैं। अर्थात कहना सही होगा कि प्रस्तुत उपन्यास में गौरा ही एकमात्र पात्र है जो संपूर्ण उपन्यास में विकासमान दिखायी देता है। वह बचपन से लेकर मैट्रिक तक भुवन की छात्रा रही है। आगे चलकर बी.ए. के पश्चात वह मद्रास में संगीत की शिक्षा अर्जित करती है। इसी दौरान अपने गुरू भुवन के प्रति उसका अनुराग बढता जाता है। उसका बचपन का स्नेह यौवन में आने तक प्रेम में परिवर्तित होता है। वह सिर्फ भुवन के लिए ही जीने लगती है। भुवन को अपना गुरू, सखा, ईश्वर सबकुछ मानकर उसकी आराधना करती है। भटके हुए भुवन का वह सहारा बन जाती है। गौरा यथाशक्ति भुवन के घावों को भरने की भरसक कोशिश करती है। पूरे उपन्यास में वह अपने दु:खों को छिपाकर दूसरों को हँसते हुए देखना चाहती है। सही अर्थ में वह भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है। गौरा के चरित्र में त्याग, प्रतिभासंपन्नता, संवदेनशीलता, शालिनता, समर्पण की भावना आदि कई गुणों का सामंजस्य पाया जाता है। अत: उसके चरित्र को इस रूप में मनावैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

### 5.3.1 गौरा का प्रतीक :-

अज्ञेय जी ने गौरा का नाम प्रतीक अर्थ में दिया है। गौरा अर्थात भारतीय पत्नीत्व का प्रतीक है - पार्वती। निष्ठा, आस्था, विवाह में स्थिरता, संयम, कला सभी गुण उसमें विद्यमान है। अज्ञेय ने अपने उपन्यास में शशि, रेखा और गौरा इन तीनों को मिलाकर भारतीय स्त्री परंपरा के व्यक्तित्व को बनाया है। भारतीयता का प्रतीक अनुराग, दायित्व और भक्ति इन सबका समन्वय गौरा में निहीत है। वह मारा जैसी तन्मयता से प्रिय की आराधना करती हुई दिखाई देती है। प्रिय की खुशी के लिए चाहे जो करना पडे इस भारतीय नारी की संस्कृति का पालन करती हुई दिखाई देती है। इस रूप में गौरा प्रतीक अर्थ में भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

### 5.3.2 प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्त्व :-

. बहुमुखी प्रतिभासंपन्न गौरा पढने में तेज होने के कारण मैट्रिक में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होती है। वह कॉलेज में भी सिर्फ पढाई में ही तेज है ऐसी बात नहीं, तो वह कॉलेज में खेले जानेवाले नाटकों में भी सक्रिय सहभाग लेती है। माँ-बाप की इच्छा का विरोध करते हुए वह अपनी इच्छानुसार संगीत शिक्षा भी पाती है। इसके विचार भी सशक्त जान पढते हैं। चंद्रमाधव के पत्र का उत्तर देते जब वह `स्वाधीनता` इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करती है तब उसकी प्रतिभासंपन्नता और भी अधिक झलकती नजर आती है। स्वाधीनता के संदर्भ में गौरा का कथन द्रष्टव्य है कि --``स्वाधीनता केवल सामाजिक गुण नहीं है। वह एक दृष्टिकोण है, व्यक्ति के मानस की एक प्रवृत्ति है। हम कहते हैं कि समाज हमें स्वाधीनता नहीं देता, पर समाज दे कैसे हमी तो अपने दृष्टिकोण से समाज बनाते हैं। मैं अपने- अपने बद्ध नहीं मानती हूँ, और स्वाधीनता के लिए अपने मन को ट्रेन करती हूँ। सफलता की बात नहीं जानती, उतनी शक्ति मेरे भीतर होगी तो क्यों नहीं होऊँगी सफल ? और मैं सोचती हूँ कि सब लोग यत्नपूर्वक अपने को स्वाधीनता के लिए ट्रेन करें तो शायद हमारा समाज भी स्वाधीन हो सके।``[12] वह चंद्रमाधव को प्रत्येक बार पत्र द्वारा ही परास्त करती है, इससे उसकी क्षमता परखी जा सकती है। जब वह जानती है कि संगीत शिक्षा के साथ संस्कृत का अध्ययन भी आवश्यक है तो तब वह संस्कृत का अध्ययन भी करती है। नाट्यशास्त्र में तो वह अपना अधिकार जमाकर ही रहती है। माँ-बाप पर बोझ न बनकर वह अपना स्वावलंबन ही खोज निकालती हैं, वह

नौकरी कर लेती है। भुवन और चंद्रमाधव के बीच जब गौरा की शादी के संदर्भ में विचार-विमर्श चलता है तब भुवन चाहता है कि गौरा की शादी जिससे भी होगी वह बहुत ही भाग्यवान होगा। इससे स्पष्ट होता है कि गौरा एक प्रतिभाशाली और सर्वगुणसंपन्न व्यक्तित्त्व है। आगे चलकर वह भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व भी करती है। गौरा के संदर्भ में डॉ. गोपालराय का मंतव्य द्रष्टव्य है कि --``समस्त उपन्यास में केवल गौरा का चरित्र ही थोडा `विकसित` होता हुआ दिखाई पड़ता है, अन्य चरित्र तो बने बनाए हैं, केवल उनका उद्‌घाटन उपन्यास में होता है।``[13]

### 5.3.3 विचारशील नारी :-

वैसे देखा जाय तो गौरा उम्र में उपन्यास में चित्रित सभी पात्रों से छोटी है। परंतु अपने उदात्त विचार, समर्पण और साधना के कारण सबसे श्रेष्ठ साबीत होती है क्योंकि उसमें विचारों की प्रौढता एवं संयम है। वह अपना हर कदम विचारपूर्वक उठाती है। भुवन को वह अपना श्रद्‌धास्थान मानती है। कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णयों के लिए वह भुवन के मार्गदर्शन का सहारा भी लेती है। बहुत सोच-विचार के बाद ही वह माँ-बाप ने लिए शादी विषयक प्रस्ताव का विरोध करती है। संगीत शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात वह अपने माता-पिता पर बोझ नहीं बनना चाहती। अत: नौकरी स्वीकार करती है। यह उसके विचारशीलता का ही द्‌योतक है। उसने लिखे पत्रों में उसकी विचारों की प्रौढता प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। गौरा रेखा को कभी भी अपने पथ की बाधा नहीं समझती, बल्कि उसे वह पूरा सम्मान देती है। इस प्रकार एक विचारशील नारी के रूप में गौरा पाठकों पर अपनी अमिट छाप छोडती है।

### 5.3.4 संगीत के माध्यम से दु:ख का अंत :-

गौरा पूरे उपन्यास में भुवन और संगीत इन दोनों विषयों में ही उलझी दिखायी देती है। कॉलेज में वह नाटक और संगीत की ओर आकर्षित होती है। धीरे-धीरे उसका यह संगीत के प्रति लगान बढ़ता ही जाता है। बी.ए. के बाद भुवन के पत्र से प्रेरणा पाकर शादी का विरोध करते हुए संगीत की शिक्षा का चयन करती है और तुरंत मद्रास चली जाती है। संगीत की साधना में वह अपने को डुबों देना चाहती है। भुवन को लिखे पत्र से उसका वह संगीत प्रेम और भी स्पष्ट होता है। वह लिखती है - ``मैं आगे पढाई नहीं कर रही। संगीत के लिए आयी हूँ। एक वर्ष यहाँ और एक वर्ष मैसूर में रहूँगी, इतनी दूर, इतनी दूर स्पष्ट

दिखता है, और इसमें इतना काम है कि आगे देखना अभी जरूरी नहीं जान पड़ता। यों यह भी लगता है कि असल चुनाव मैंने कर लिया है।``[14] संगीत साधना के लिए वह कड़ी मेहनत करती है। अपने सभी दु:खों को वह संगीत में भूल जाती है। आगे चलकर वह संगीत की ही अध्यापिका के रूप में कार्यरत रहती है। संगीत में अपने गमों को डुबा देती है और आत्मशांती पाती है। उसकी तल्लीनता से ही उसका संगीतप्रेम झलकता है----``कोई वाद्य लेकर बजाने बैठ जाती है कि उसमें लज्जा और उस समुची विचार-परंपरा को डुबा दे--- और वास्तव में वह बजाते- बजाते विभोर हो उठती, तब वे सब रेखाएँ मिट जाती और सचमुच एक अद्‌भूत कांति उसके चेहरे पर छा जाती, लेकिन वह स्वयं उसे न जान पातीं, वादन समाप्त करके वह स्वयं उसे न जान पाती, वादन समाप्त करके वह उठती तो उसके चेहरे पर एक मृदुल स्थिरता का भाव होता, जैसा सद्य: सोकर उठे स्वस्थ शिशु के चेहरे पर होता है।``[15] इसी संगीत से वह घर आए रेखा और चंद्रमाधव का मनोरंजन करती है। इस प्रकार संगीत के साथ गौरा एकाकार हुई दिखाई देती है।

### 5.3.5 सभी के प्रति आत्मीयता और सम्मान का भाव :-

गौरा संपर्क में आए हर एक का सम्मान करती है। वह खुद को हमेशा छोटी समझती है, यह उसकी विनम्रता सभी पर अपनी अमीट छाप छोडती है। भुवन के प्रति तो वह पूर्णरूप से समर्पित है। भवुन को वह अपना गुरू, सखा, ईश्वर सबकुछ मानती है। खुद की कम लेकिन भुवन की ज्यादह चिंता उसे लगी रहती है। भुवन के मित्र चंद्रमाधव का परिचय उसे भुवन द्‌वारा होता है। तो चंद्र के साथ भी यथोचित व्यवहार करती है। बाद में चंद्र से पत्रव्यवहार भी करती रहती है। चंद्र के निराशावादी विचारों का बड़ी शालीनता से आशावादी उत्तर देती है। बाद में चंद्र की दुष्प्रवृत्ति वह जान जाती है। रेखा को वह किस लिए मिलता है? भुवन और रेखा के संबंधों की जानकारी वह क्यों देता है ? यह सबकुछ जानकर भी वह कभी चंद्र को फटकारती नहीं बल्कि घर आनेपर भी यथोचित स्वागत करती है। रेखा भुवन की प्रेमिका है, उससे मिलकर भी वह विचलित नहीं होती। बल्कि घर आयी रेखा भी स्वागत करती है। रेखा के साथ आत्मियता से बातचित करती है। रेखा द्‌वारा दी गई अंगुठी का बडी नम्रता के साथ इंकार कर देती है। रेखा का डाईओर्स का पता जब उसे चलता है तब रेखा को भेजे पत्र में उसकी रेखा के प्रति आत्मियता स्पष्ट होती है। वह लिखती है - ``यों किसी की निजी बातों में हस्तक्षेप करने बडी झिझक होती है और विशेषकर आपकी, क्योंकि आपके जीवन के बारे में कुछ न जानते हुए भी मैं इतना जानती हूँ कि आपने बहुत सहा है और

आपकी कोई भी निजी बात निजी कष्ट की ही बात होगी ---छोटे आशीर्वाद नहीं देते, इसे मेरी प्रार्थना समझ लीजिए कि आपका जीवन शांतिमय हो, कल्याणमय हो।``[16] अंत में रेखा आशीर्वाद स्वरूप जब वही अंगुठी पार्सल द्वारा भेज देती है तो उसका बड़ी शालिनता से वह स्वीकार करती है। इस प्रकार गौरा सभी के साथ सम्मान का व्यवहार करती हुई दिखायी देती है।

### 5.3.6 निस्वार्थ प्रेम भावना :-

बचपन में मास्टरजी से प्रभावित गौरा जब यौवनावस्था में प्रवेश करती है तो वह अपना सबकुछ भुवन को ही मानने लगती है। दिन-ब-दिन भुवन से उसका प्रेम बढ़ता ही जाता है। वह अपना हर फैसला भुवन पर सौंप देती है। लेकिन भुवन के इस प्यार को वह कहीं भी व्यक्त नहीं करती। मीरा जैसी भक्ति में ही वह अपनी सफलता मानती है। पूरे उपन्यास में वह अपने बारे में नहीं लेकिन भुवन के बारे में ही अधिक सोचती हुई दिखाई देती है। भुवन से उसे प्रेम मिलेगा या नहीं, इसका विचार वह नहीं करती। वह अविरत भुवन की भक्ति में लगी रहती है। चंद्रमाधव जब भुवन को विज्ञान का नशाबाज कहता है तब गौरा उसका तिखा जवाब देकर अपना भुवन के प्रति प्रेम ही दिखाती है। उत्तर स्वरुप वह चंद्रमाधव को लिखती है - ``जिसे आप नशेबाज कहते हैं और मैं आप अनुमति दें - साधक कहूँगी, वह अपने नशे से इतर बातों में बिल्कुल असस्पृक्त होता है, यही उसकी शक्ति है। आप कहते हैं कि वह इसीलिए अविश्वास्थ है, मैं कहती हूँ कि इसीलिए वह विश्वास्थ हैं, क्योंकि विश्वास - अविश्वास दोनों ही उसे नहीं छूते।``[17] गौरा खुद को भुवन से बहुत ही छोटी मानती है। वह भुवन के लिए अपने -आप को मिटा देने में भी आनंद महसुस करती है। चंद्रमाधव जब ईर्षावत गौरा को रेखा और भुवन के संबंधों की जानकारी देता है तब भी वह बिल्कुल व्यथित नहीं होती। रेखा के गर्भपात के बाद कुंठित भुवन जीवन से पलायन करता हुआ दिखायी देता है तो गौरा बहुत ही दु:खी होती है। भुवन के इस पलायन वृत्ति को दूर करने के लिए वह पत्र द्वारा समझाती है। अत: भुवन की खुशी के लिए खुद को मिटा देने में भी वह अपनी सफलता मानती है। धीरे- धीरे भुवन भी गौरा की ओर आकर्षित होता है। मंथर गति से पकनेवाला प्यार ही भुवन को `मास्टर जी`, `भुवन दा और शिशु भवन बना देता है। इस प्रकार प्रेमसाधिका के रूप में गौरा हमारे सामने प्रस्तुत है।

### 5.3.7 संयमी :-

गौरा संयमी व्यक्तित्व को संजोए रखनेवाली भारतीय नारी है। परिस्थिति कैसी भी हो संयम के साथ उसका डटकर मुकाबला करना गौरा की एक प्रमुख विशेषता है। चाहकर भी भुवन उससे दूर भागता रहता है परंतु फिर भी गौरा कोई शिकायत नहीं करती। वह सिर्फ इतना चाहती है कि भुवन जहाँ भी रहे, जैसा भी रहे खुश रहे।अगर भुवन के कष्ट को कम करने में वह काम आयी तो अपना सौभाग्य मानती है।शादी के प्रस्ताव से लडखड़ाने के बाद वह अपना संयम खोने नहीं देती। भुवन से परामर्श करने के बाद शादी का विरोध करती है। रेखा और भुवन के संबंधों की जानकारी होने पर भी वह उसका विरोध नहीं करती बल्कि सहजता से इस संबंध को भी स्वीकारती है। क्योंकि वह परिस्थिति से समझौता करना जानती है। परिणाम स्वरुप आखीर उसकी साधना पूरी होती है। इसी संयमी व्यक्तित्त्व के कारण वह किसी से भी ईर्ष्या नहीं करती। वह भविष्य में आस्था मानकर वर्तमान में दु:ख झेलती है, और अंत में सफलता भी पाती है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि उपर्युक्त चारित्रिक विशेषताओं का अंतर्भाव करनेवाली गौरा सही अर्थों में भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

### 5.4 योके :-

`अपने-अपने अजनबी` इस लघु-उपन्यास की नायिका और प्रमुख नारी पात्र योके है। अज्ञेय ने अनास्थावादी पाश्चात्य संस्कृति को हारकर पौर्वात्य आस्थावादी संस्कृति की शरण में आना ही पड़ता है इस प्रमुख उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए पाश्चात्य संस्कृति के प्रतीक के रूप में ही योके का चुनाव किया है। योके एक नवयौवना प्रेमी युवती है, पूरी अभोगी जवानी उसके सामने पड़ी है। फिर भी नियती ने उसे काठघर में कैंसर से त्रस्त जीवन की अंतिम साँसे गिनती हुई सेल्मा के साथ रहने के लिए मजबूर किया है। योके के संदर्भ में डॉ. केदार शर्मा लिखते हैं - ``योके कौन है? उसका पूरा परिचय देना लेखक ने महत्त्व का नहीं समझा है। पाठक के लिए उसने बर्फ के नीचे दबे काढघर में ही जवान लड़की के रूप में जन्म लिया है। दुनिया में वह पॉल के सिवा किसी को नहीं जानती। उसका कोई अतीत नहीं है। विगत की कोई स्मृति नहीं है। वह वर्तमान में ही जीती, मरती है। अतीत से कटी, वर्तमान के प्रति

आक्रोशशीला और वरण-स्वातंत्र्य के लिए छटपटाती हुई योके को पश्चिमी चिंतन की विकृति और दुर्बलता दिखाने के लिए ही अज्ञेय ने चुना है।``[18] इसके अलावा योके की और भी चारित्रिक विशेषताएँ पाई जाती हैं जो इसप्रकार हैं-

### 5.4.1 साहस और प्रेम भावना से ओत-प्रोत :-

योके को लेखक ने जवानी की अवस्था में ही चित्रित किया है। जवानी की मस्ती में, मस्ती के आलम में वह पॉल से प्यार करती है। उनके प्यार का सिलसिला कब और कैसे आरंभ हुआ इसका ब्यौरा नहीं मिलता। वह अपने प्रेमी पॉल के साथ पहाडों और बर्फ की सैर करने आयी थी। पहाडों की खुली हवा पीते-पीते इक-दूजे के अंदर की स्निग्ध गरमाई को जानकर प्यार की मस्ती में वह अनेक खतरों को झेल चुकी है। आल्प्स में बर्फानी चट्टानों की चढाईयाँ भी वह चढती रही है। इतना ही नहीं हिम नदी से फिसलकर उसके हाथ-पैर भी टूटते-टूटते बच गए थे। इसप्रकार अपनी जवानी को पूरी तरह स्वच्छंदता से भोगने के लिए ही वह अनेक जगहों पर सैर कर चुकी है। साहस के कारण अनेक खतरों से भी वह खेल चूकी है। अचानक बर्फ से ढँके काठघर में कैद होकर भी उसे विश्वास है कि हिम-पात के कारण बिछडा पॉल उसे अवश्य ढूँढ निकालेगा। क्योंकि वह हमेशा योके से कहता था कि दुनिया के किसी भी कोने से लाखों-करोडों में से भी वह उसे तुरंत खोज निकालेगा। इससे योके का अपने प्रेम के प्रति अढ़िग विश्वास ही स्पष्ट होता है और वह एक साहसी प्रेमिका के रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित होती है।

### 5.4.2 योके का मानसिक द्वंद्व :-

योके के चरित्र में मानसिक रूप से परस्पर विरोधी विशेषताएँ पायी जाती है। इससे उसका द्वंद्व ही स्पष्ट होता है। वह एक ओर साहस और नीड़रता से काम लेती है तो दूसरी ओर परिस्थिति के थपेड़ों में आकर डरपोक बन जाती है। इन विशेषताओं से उसका मानसिक द्वंद्व ही सामने आता है। उसकी नीडर एवं साहसी वृत्ति उसके प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होती है। वह सेल्मा से कहती है - `` मैं बर्फ से नहीं डरती। डरती होती तो यहाँ आती ही क्यों ? इससे पहले आल्प्स में बर्फानी चट्टानों की चढाइयाँ चढ़ती रही हूँ। एक बार हिम-नदी से फिसलकर गिरी भी थी। हाथ-पैर टूट गए होते- बच ही गई। फिर भी यहाँ भी तो बर्फ की सैर करने ही आई थी।``[19] परंतु प्रसंग आने पर वह डर भी जाती है। इससे उसकी

द्वंद्वपूर्ण मानसिकता ही स्पष्ट होती है।

### 5.4.3 अनास्थावादी :-

योके पाश्चात्य संस्कृति का प्रतिनिधित्व करनेवाला प्रतीकात्मक पात्र है। अनास्थावादी पाश्चात्य संस्कृति ईश्वर को नहीं मानती। उसका भूत एवं भविष्य पर भी विश्वास नहीं है। वर्तमान ही सबकुछ मानकर उसमें ही जीना चाहती है। अत: जवान योके भी जब विवशतावश आस्थावादी सेल्मा के साथ रहने के लिए मजबूर होती है तब सेल्मा की ईश्वर के प्रति निष्ठा, श्रद्धा देखकर वह ईश्वर से ही नफरत करने लगती है। मृत्यु को ही जीवन की एकमात्र सच्चाई मानने लगती है और हमेशा मृत्यु के बारे में ही सोचने लगती है। वह ईश्वर विरोधी विचार भी स्पष्ट करती है। इसी विचारधारा के कारण वह विक्षिप्त बन जाती है। हमेशा सेल्मा का खून करने का ख्याल ही उसके मन में उमड़ने लगता है। उसके ईश्वर विरोधी स्वर स्पष्ट है कि - ``मैं अगर ईश्वर को नहीं मान सकती तो नहीं मान सकती, और अगर ईश्वर मृत्यु का ही दूसरा नाम है तो मैं उसे क्यों मानूँ ?``[20] इसप्रकार से उसका ईश्वर के प्रति बढ़ता हुआ तिरस्कृत भाव और भी प्रबल हो जाता है। परिणामत: वह ईश्वर को गालियाँ तक देती है। इससे ही उसकी अनास्थावादी दृष्टि स्पष्ट रूप से दिखती है।

### 5.4.4 क्षणवादी प्रवृत्ति :-

अनास्थावादी व्यक्ति को सिर्फ वर्तमान में ही जीना सिखाता है। वह भविष्य और भूत पर नहीं सोचता। काठघर में कैद योके भी अनास्थावादी होने के कारण भविष्य में विश्वास नहीं रखती। वह क्षणवादी बनती है। यह क्षणवादी प्रवृत्ति ही उसे काठघर को कब्र कहने के लिए मजबूर कर देती है। वह सेल्मा के आस्थावादी व्यवहार से और मृत्युगंध से पूरी तरह बेचैन हो जाती है और सिर्फ मृत्यु के ही बारे में सोचने लगती है। जवान होकर और पूरी अभोगी जवानी साथ में होकर भी वह वर्तमानवादी ही बन जाती है। वह क्षण को ही सत्य मानती है। क्षण के संदर्भ में उसके विचार दृष्टव्य हैं कि - ```क्षण` वही है, जिसमें अनुभव तो है लेकिन जिसका इतिहास नहीं है, जिसका भूत-भविष्य कुछ नहीं है, जो शुद्ध वर्तमान हे, इतिहास से परे, स्मृति के संसर्ग से अदूषित संसार से मुक्त।``[21] इससे योके की क्षणवादी प्रवृत्ति हमारे सामने दृष्टिगोचर होती है।

### 5.4.5 कुंठित :-

कोई भी व्यक्ति हो, उसे अपने मन में स्थिति दमित विचार या वासना को व्यक्त करने का मौका नहीं मिलता, तब वह कुंठित हो जाता है। योके इन्हीं में से एक है। सेल्मा और योके समानावस्था में कैद है फिर भी कैंसर की पीड़ा भोगनेवाली सेल्मा जीवन और मृत्यु को जिस रूप में देख रही है उससे योके को नफरत पैदा होती है। परिणामस्वरुप सेल्मा के प्रति उसके मन में अपनत्व नहीं आ पाता। साथ रहकर भी उससे वह अजनबी ही रहती है। वह पूरी तरह से उससे दूर रहने का प्रयास भी करती है। वह मृत्यु के बारे में ही हमेशा सोचकर घबरा जाती है। वह अपना संतुलन खो बैठती है। अत: सोचती है कि कहीं न कहीं बुढ़िया में झूठ अवश्य है, लेकिन वह दिखाना नहीं चाहती।यह उसकी मानसिकता कुंढा का ही परिणाम है। योके की कुंठा यहाँ तक बढती है कि वह सेल्मा की जान लेना चाहती है और जान लेने का असफल प्रयास भी करती है। क्योंकि वह अकेला रहना चाहती है। सेल्मा की उपस्थिति उसे असहाय होती है। इसप्रकार उसकी अवस्था पूर्णत: कुंठित होती है। परिणामस्वरुप जब वह जर्मनों द्वारा बलात्कारित होती है तो पागल हो जाती है।

### 5.4.6 अहंवादी :-

योके अहंवादी है। सेल्मा कैंसर की मरीज है यह जानकर भी योके जान-बूझकर बार-बार उसे बीमार कहकर उसे बिमारी की याद दिलाकर त्रस्त करती है। वास्तव में उसका कर्तव्य था कि एक मृत्यु के निकट पहुँची बुढ़िया की सेवा करें, परंतु उसमें यह सेवा-भाव तो दूर की बात उलटा वह उसकी भर्त्सना ही करती है। इसमें उसका अहं ही छिपा है। सेल्मा की सेवा न करना, उसका श्रेष्ठत्व न स्वीकारना, उससे उच्चता का भाव रखना उसे गडरियों की माँ, बुढ़िया आदि संबोधनों से बार-बार पुकारना अहंवादीता का ही रूप है। आत्मीयता की कमी के कारण वह बुढ़िया से ऐसा व्यवहार करती है। क्षमाशील, बीमार बुढ़िया के प्रति मन में ईर्ष्या का भाव रखती है। यहाँ तक की वह सेल्मा की जान तक लेना चाहती है । इसप्रकार से योके की बढ़ती हुई कुंठा ही उसे अहंवादी बना देती है।

### 5.4.7 मृत्युभय से आक्रांत :-

उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक योके मृत्यु से संघर्ष करती हुई, मृत्यु भय से आक्रांत दिखाई देती है। बंदिनी योके को हर क्षण सेल्मा के शरीर से एक अजीब मृत्युगंध आने लगती है। पूरे कमरे में वह गंध फैल जाती है। काठघर में कैद योके अनास्थावाद के कारण मृत्युगंध से त्रस्त होकर सिर्फ मृत्यु पर ही सोचने लगती है। वह मृत्यु को ही जीवन की एकमात्र सच्चाई मानने लगती है। उसके अनुसार - ``यही बर्फ से ढँका हुआ काठघर का बँगला उनकी कब्र बन जाएगा ? बल्कि कब्र बन क्या जाएगा, कब्र तो बनी-बनायी तैयार है और उन्हीं को मरना बाकी है।``[22] उसे अपने प्रेमी पॉल पर पूरा विश्वास होकर भी वह सोचती है कि पॉल ढूँढ निकालेगा पर किसको मुझे या मेरी लाश को। इस प्रकार वह हमेशा बहुत ही घबराई हुई दिखायी देती है। मृत्युगंध पूरे कमरे में बढती ही जाती है और योके की बेचैनी और भी अधिक बढ़ती जाती है। वह घर के हर वस्तु से डरने लगती है। यहाँ तक कि उसे अपने-आप से डर लगने लगता है। इसप्रकार से वह मृत्यु के भय से आक्रांत दिखाई देती है।

**5.4.8 बलात्कारित पागल योके :-**

बुढ़िया सेल्मा की मौत के बाद योके का मानसिक संतुलन पूरी तरह से बिघड़ता जाता है। वह अपने आपको अकेला महसूस करती है। ऐसे हालत में ही उसे दूर से आते कुछ लोग दिखाई देते हैं। उनमें अपना प्रेमी पॉल है या नहीं यह तक वह समझ नहीं पाती। अंत में वह जर्मन सैनिकों के चंगुल में फँस जाती है। वह उनकी वासना का शिकार बन जाती है। वह कलंकित हो जाती है और उसमें ही पागल बन जाती है। पागलावस्था में ही भटकते हुए एक राशन दूकान पर आती है। वहाँ बहुत भीड़ में ही जगन्नाथ नामक व्यक्ति के पास स्थित पनीर पर अपना सिगरेट रखड़कर बुझाती है और भागने लगती है। जगन्नाथ भी उसके पिछे दौडने लगता है। तब लोग उसे आगंतुका कहते हैं। अंत में थककर एक सीढ़ी के पास वह रूक जाती है। वहीं पर वह जहर खाकर अपना देहांत कर देती है। उससे कुछ क्षण पूर्व वह जगन्नाथ की बाहों में गिर पड़ती है और कहती हैं - ``कह दो- सारी हरामी दुनिया से कह दो, अंत में मैं हारी नहीं- अंत में मैंने जो चाहा सो किया- मरजी से किया। चुनकर किया। मैं मरियम ईसा की माँ -ईश्वर की माँ मरियम- जिसको जर्मनों ने वेश्या बनाया।``[23] अर्थात उसकी इच्छा ही थी कि उसकी मृत्यु अच्छे आदमी के बाहों में हो। वह जगन्नाथ के बाहों में ही दम तोड़ देती है। इसप्रकार अनास्थावादी योके अंत में हार कर आस्थावाद के शरण में ही अपना दम तोड़ देती है।

योके की चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन- अध्यापन करने के पश्चात हम संक्षेप में कह सकते हैं कि अज्ञेय जी ने योके को किसी प्रकार की आजादी नहीं दी है, परंतु वे उसे प्रस्तुत करने में पूरी तरह से सफल हुए हैं। कुयल्ल में फँसी योके जो अनास्थावाद का प्रतिनिधित्व करती है उसे आखीर अपने जीवन में हारकर आस्थावाद की शरण में आना पड़ता है। यहीं प्रस्थापती करने का लेखक का सर्वप्रथम उद्देश्य रहा है। अर्थात पाश्चात्य संस्कृति कितनी ही प्रगत क्यों न हो परंतु उसे हारकर पौर्वात्य संस्कृति की शरण लेनी ही पड़ती है। तभी उसे मुक्ति मिल सकती है।

## 5.5 सेल्मा :-

सेल्मा `अपने-अपने अजनबी` उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र है। बर्फ से ढँके काठघर में सेल्मा बंद है। वह सबसे पहले कैंसर की मरीज के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत है। सेल्मा के तीन बेटे हैं जिनमें से दो गडरिए और एक लडकहारा है। सेल्मा बंद काठघर में अनास्थावादी योके के साथ रहने के लिए मजबूर है। उसके व्यक्तित्त्व में अहं, अवसरवादी, आशावादी तथा परिवर्तनशील आदि चारित्रिक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। इनका विवेचन यहाँ दृष्टव्य है ----

### 5.5.1 अहंवादी :-

सेल्मा का व्यक्तित्त्व अहंपूर्ण है। वह योके को बार-बार यह दिखाना चाहती है कि मैं अपना सारा काम स्वयं कर सकती हूँ। रात भर नींद न आने पर भी चुपचाप सबेरे उठकर योके के लिए नाश्ता बनाती है। क्रिसमस आने पर गाना गाने की कोशिश करती है। उस की बीमारी दिन-ब-दिन बढती ही जाती है। वह कुछ खाती-पीती भी नहीं है। वह जीता-जागता प्रेत दिखायी देती है। योके के अधिक प्रश्न पुछने पर वह चिड़चिड़ी बन जाती है। बीमार, मरनासन्न होकर भी वह योके को दिखाना चाहती है कि अभी अपना सारा काम वह स्वयं किसी का सहारा लिए बगैर कर सकती है। वह बीमारी में भी योके का तक काम कर देती है। परिणामत: योके के प्रश्न पूछने पर वह कहती है - ``मैं क्या खाती-पीती हूँ उससे तुम्हें क्या मतलब है ? तुम यहाँ मेहमान हो, लेकिन इससे क्या--- मेरी बीमारी की बात बार-बार दोहराने की जरूरत नहीं है - मैं जानती हूँ कि मैं बीमार हूँ। मैं क्या जानबूझकर हुई हूँ या कि तुम्हें सताने के लिए बीमार हुई हूँ। और स्वतंत्रता कौन स्वतंत्र है ? कौन चुन सकता है कि वह कैसे रहेगा, या नहीं रहेगा ? मैं क्या स्वतंत्र हूँ कि

बीमार न रहूँ- या कि अब बीमार हूँ तो इतनी स्वतंत्र हूँ कि मर जाऊँ ? मैंने चाहा था कि अंतिम दिनों में कोई मेरे पास न हो। लेकिन वह भी क्या मैं चुन सकी? तुम क्या समझती हो कि इससे मुझे तकलीफ नहीं होती कि जो मैं अपनों को भी दिखाना नहीं चाहती थी। उसे देखने के लिए भगवान ने एक अजनबी भेज दिया।``[24] इससे स्पष्ट होता है कि दमनीय स्थिति में भी वह योके का सहारा नहीं लेती बल्कि उस पर बिगड़ती है। निर्जीव वस्तुओं पर भी बिगड़कर गालियाँ देने लगती है। इसप्रकार उसकी कुंठा उसे अहंवादी बना देती है।

### 5.5.2 अवसरवादी :-

पैसा ही सबकुछ मानकर सेल्मा अपनी चाय की दूकान चलाती है। सेल्मा, यान और फोटोग्राफर पूल के टूटने से वहीं पर कैद हो जाते हैं। उनका कस्बे से संपर्क टूट जाता है। सेल्मा के पास खाने की चीजें काफी मात्रा में थी परंतु यान और फोटोग्राफर की स्थिति बहुत ही दयनीय बन जाती है। सेल्मा के पास सभी चीजें होकर भी वह उनकी सहायता नहीं करती। बल्कि ऐसी अवस्था में भी वह अपने फायदे की ही सोचती है। भुखा-प्यासा याने उसके पास ईंधन लेने आता है तो वह निर्दयता से कहती है --``ईंधन की तो बहुत कमी है। कुछ बनाने में दुगुने दाम लगेंगे।``[25] कोई दूसरा चारा न पाकर यान दुगुना दाम देने पर विवश होता है। प्यास से तड़पता फोटोग्राफर सेल्मा के पास अच्छा पानी माँगने आता है, तो वह बडी क्रूरता से उसे टालती है। तात्पर्य यह है कि वह अवसर का लाभ उठाकर फोटोग्राफर से भी दुगुना दाम वसुल करना चाहती है। इसप्रकार सैल्मा बिना पैसे पानी तक नहीं देती। यहाँ तक कि वह पैसे भी तुरंत माँगती है और बाद में चीतें देती है। इस प्रकार अवसर का लाभ उठाना वह अपना व्यापार धर्म समझती है। यान के पास कुछ पैसे कम होने पर उतने पैसे का गोश्त वह कम देती है। यान जेब के सारे सिक्के उसके मुँहपर मारके चला जाता है। तब वह अपने व्यापार का औचित्य सोचती है। मौत के मुँह में पूल कर कैद सेल्मा न जाने बचकर निकलेगी भी या नहीं, लेकिन उसे इन बातों की जरा भी फिक्र नहीं। सेल्मा का तर्क उसकी व्यावहारिकता से सही हो सकता है परंतु उनमें मानवीयता एवं नैतिकता का अभाव ही पाया जाता है। फोटोग्राफर की आत्महत्या के लिए सेल्मा ही जिम्मेदार है। इससे उसकी स्वार्थी प्रवृत्ति, अवसरवादीता तथा हृदयहीनता ही स्पष्ट होती है।

### 5.5.3 आशावादी एवं मृत्यु से संघर्षरत :-

सेल्मा कैंसर से पीड़ित तथा अत्यंत सर्दी के कारण सेल्मा के सामने मृत्यु का स्पष्ट संकेत है। उसका जीवन विरक्त, कुंठित, अंतमुर्खी और अहंपूर्ण है। जीवन में सभी जगह पर हारने पर भी नयी उमंग के साथ फिर से जीवन जीना चाहती है। वह इसके लिए मृत्यु से तक संघर्ष करती है। उसका अपना एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है।उस व्यक्तित्व में सभीं प्रकार की चित्तप्रवृत्तियाँ हैं। जीवन जीने की तीव्र इच्छा में उसे आशा है कि आनेवाले `क्रिसमस` को वह जरूर देखेगी। वह योके को खतरे में न पड़ने की सलाह देती है। कहते है - ``---डर के साथ कैद होकर कैसा रहा जा सकता है ? नहीं रहा जा सकता - बिल्कुल नहीं जा सकता।``[26] वह योके के साथ अजनबीपन नष्ट करने के लिए ताश खेलना भी चाहती है। योके को मृत्यु के डर के सिवाय मानो कुछ सूझता ही नहीं। तब सेल्मा कहती है -----``योके, तुम्हारा ध्यान हमेशा मृत्यु की ओर क्यों रहता है ?``[27] सेल्मा को अपनी व्याधि, बुढ़ापा और मृत्यु की पूर्ण कल्पना है फिर भी उसे याद करके वह अपने को निराश करना नहीं चाहती बल्कि यों कहें वह अपनी यथार्थ स्थिति की कल्पना योके को दिलाना नहीं चाहती। इससे ही उसका आशावादी रूख स्पष्ट होता है।

### 5.5.4 परिवर्तनशील :-

सेल्मा प्रतीक रूप में आस्थावाद का प्रतिनिधित्व करती है। परंतु उसके जीवन पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि वह एक परिवर्तनशील पात्र है। प्रारंभ में वह, यान और फोटोग्राफर अपने-अपने दूकान चलाते दिखाए हैं। परंतु आत्मकेंद्रित सेल्मा दोनों के साथ रहकर भी अजनबीपन का व्यवहार करते हुए अपने हृदयहीनता और क्रूरता का परिचय दती है। परिणाम स्वरुप फोटोग्राफर नदी का गंदा पानी पीकर बीमार पड जाता है और बीमारी से त्रस्त होकर आत्महत्या करता है। अगर सेल्मा के मन में उसके प्रति अल्प-सी ही क्यों न हो सहानुभूति जागृत होती, तो वह आत्महत्या नहीं करता। सेल्मा इस घटना का दायित्त्व अपने उपर नहीं लेती परंतु कहीं- न-कहीं यह भाव उसके अंतर्मन में उभर आता है कि मेरे व्यवहार के कारण ही फोटोग्राफर की मृत्यु हुई है। तभी उसकी स्वार्थी प्रवृत्ति नष्ट होती है। दूसरे दिन जब जली हुई दूकान की आग पर गोश्त पकाते हुए वह यान को देखती है। तब तो यह दृष्य उसके मन को हिला देता है। यान द्वारा प्रताड़ित सेल्मा का हृदय पूर्णत: परिवर्तित होता है तब वह उसके सामने शादी का

प्रस्ताव रखती है। तब यान सेल्मा की पाप की कमाई से विवाह अस्वीकार करता है और पूरा भोजन वहीं पर छोडकर चला जाता है। यान का प्रस्तुत व्यवहार सेल्मा की पूरी जीवनदृष्टि ही बदल देता है। वह पूरी तरह से यान पर समर्पित होती है। इस प्रकार सेल्मा की बनाई विरोध की दीवार आत्मसमर्पण केप्रवाह में बह जाती है। इससे उसकी परिवर्तनशीलता ही स्पष्ट होती है।

### 5.5.5 मृत्यु को तटस्थ भाव से देखना :-

कैंसर से पीड़ित जानती है कि मौत उसके अति समिप है। फिर भी वह भयभीत नहीं होती बल्कि मृत्यु का स्वागत करने के लिए भी तत्पर दिखाई देती है। अत: कई बार वह जीने की प्रबल आशा रखती है तो कभी-कभी मृत्यु का स्वागत करने के लिए भी तत्पर दिखाई देती है। अत: स्पष्ट है कि वह मृत्यु को तटस्थ भाव से ही देखती है। सेल्मा का यह सारा रहस्यमय जीवन देखकर जब योके पूछती है कि वह किसके सहारे पर निर्भर है। तो सेल्मा उसे उत्तर देती है----``मुझे किसका सहारा है मैं नहीं जानती। ईश्वर का है यह भी किस मुँह से कह सकती हूँ ? शायद मृत्यु का ही सहारा है। वह है बिल्कुल पास है। सामने खड़ी है - लगता है हाथ बढाकर उसे छू सकती हूँ।``[28] इस प्रकार वह मृत्यु का स्वागत करने के लिए भी उत्सुक दिखाई देती है।

इस प्रकार सेल्मा भारतीय आस्थावाद के प्रतीक के रूप में हमारे सामने आती है। परिस्थिति के अनुरूप उसके जीवन में अनेक बार परिवर्तन आया है। पूरा जीवन वह अपनी मर्जी के अनुरूप ही जीती है। साक्षात मृत्यु को सामने देखकर भी तटस्थ भाव से वह उसकी ओर देखती रहती है।

### निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन एवं विवेचन- विश्लेषण के पश्चात मैं इस निष्कर्ष तक पहूँचा हूँ कि अज्ञेय के उपन्यास संसार में प्रमुख नारी पात्रों के अंतर्गत `शेखर : एक जीवनी` भाग एक और दो की नायिका शशि, `नदी के द्वीप` की स्त्री पात्र रेखा और गौरा तथा `अपने-अपने अजनबी` की प्रमुख स्त्री पात्र योके और सेल्मा ही निश्चित होती हैं।

बृहत उपन्यास `शेखर : एक जीवनी` की नायिका शशि है। वह कुंठित, भटके हुए

शेखर की प्रेरणा के रूप मं उभर आती है। शेखर को बनाने के लिए वह खुद का आत्मोत्सर्ग तक कर देती है। शशि रिश्ते से शेखर की बहन होकर भी वह कई बार शेखर की प्रेमिका बनकर पाठकों के सामने आती है। कारण उसे अनेक शारीरिक और मानसिक यातनाओं का शिकार होना पड़ता है। शशि के शेखर के प्रति अनुराग है तथा वह विवेक की प्रतिमुर्ति के रूप में भी पाठक के मन- मस्तिष्क पर अपनी अमीट छाप छोड़ती है। तब उसके चारित्रिक विशेषताओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने पर वह पूर्ण रूप से आदर्श भारतीय नारी के रूप में स्थापीत होती है।

`नदी के द्वीप` की प्रमुख स्त्री पात्र रेखा का चित्रण एक स्वच्छंदी मध्यवर्ग की आधुनिक नारी के रूप में करने का सफल प्रयास अज्ञेय द्वारा किया है। घुमक्कड़ प्रवृत्ति की रेखा अनेक जगहों पर नौकरी करती है। पति हेमेंद्र की निष्क्रियता के कारण वह वैज्ञानिक भुव को अपना समर्पण कर देती है। गौरा का भुवन के प्रति लगाव देखकर रेखा उन दोनों से दूर हटना चाहती है। वह अपने प्रेमी भुवन के लिए खुद का आत्मोत्सर्ग करने में जरा भी नहीं हिचकिचाती। अत: रेखा के कारण ही `नदी के द्वीप` को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। अज्ञेय जी ने रेखा के व्यक्तित्त्व के हर पहलू का तथा मानसिक अवस्था का चित्रण बड़ी खुबी के साथ किया है। सच है कि अज्ञेय के कारण रेखा को और रेखा के कारण `नदी के द्वीप` को अलौकिकता प्राप्त हुई है।

रेखा के साथ-साथ उतनी ही अहम भूमिका निभाने का काम गौरा ने किया है। सही अर्थों में देखा जाय तो रेखा से भी जादह सफलता अज्ञेय जी को गौरा के चरित्र में मिली है। क्योंकि तीनों उपन्यासों में गौरा ही एक ऐसा पात्र है जो विकसित होता हुआ दिखायी देता है। बाकी सभी स्त्री पात्र बने-बनाए लगते हैं। गौरा को भारतीय नारी के रूप में प्रस्थापित किया है। वह सुसंस्कृत, विनयशील, विचारशील और प्रतिभासंपन्न है। गौरा स्वयं को दु:खों में डूबोकर दूसरों को हँसते हुए देखने में ही ज्यादह खुशी मानती है। अपने गुरू भुवन के प्रति आसक्त होकर भी वह अपनी भावना कभी व्यक्त नहीं करती। मीरां जैसी तन्मयता उसकी प्रेम और भक्ति में दिखायी देती है। इसी कारण हर पाठक की सहानुभूति गौरा के प्रति परिलक्षित होती है। अत: स्पष्ट है कि अज्ञेय जी को गौरा के विश्लेषण में काफी सफलता मिली है।

अज्ञेय के तीसरे उपन्यास `अपने-अपने अजनबी` की पमुख स्त्री पात्र योके और सेल्मा ही

है। उनमें से योके प्रस्तुत उपन्यास की नायिका सिद्ध है। उसकी चारित्रिक विशेषताओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि पश्चिम संस्कृति का प्रतीक, अनास्थावादी, क्षणवादी योके एक कुंठित पात्र है। परंतु आगे चलकर वह आस्थावादी सेल्मा के साथ रहकर अंत में आस्थावाद में विश्वास रखती है। यही कारण है कि जर्मन सैनिकों द्वारा बलात्कारित योके आस्थावादी जगन्नाथ की बाहों में अपने प्राण छोड़ देती है। योके के माध्यम से अज्ञये जी ने बहुत ही कम शब्दों में पश्चिमी संस्कृति का चित्रण किया है। अत: कहना सही होगा कि योके का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने में अज्ञेय जी को काफी सफलता मिली है। `अपने-अपने अजनबी` उपन्यास का अन्य प्रमुख -स्त्री पात्र है सेल्मा। वह भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है तथा आस्थावाद में विश्वास रखती है। कैंसर से पीड़ित सेल्मा बहुत ही आस्थावादी है।

अत: स्पष्ट है अज्ञेय जी को सभी प्रमुख स्त्री पात्रों के विश्लेषण में बेहद सफलता प्राप्त हुई है।

## : संदर्भ :


1. डॉ. विमल सहस्त्रबुद्धे - हिंदी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, पृष्ठ. 358
2. अज्ञेय - शेखर : एक जीवनी भाग- 2, पृष्ठ. 42
3. वही, पृष्ठ. 216
4. वही, पृष्ठ. 79
5. वही, पृष्ठ. 80
6. डॉ. विमल सहस्त्रबुद्धे - हिंदी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, पृष्ठ. 359
7. अज्ञेय - शेखर : एक जीवनी, भाग-1, पृष्ठ. 4
8. अज्ञेय - नदी के द्वीप, पृष्ठ. 238- 39
9. वही, पृष्ठ. 214
10. वही, पृष्ठ. 279-80
11. वही, पृष्ठ. 314
12. वही, पृष्ठ. 77
13. डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र- हिंदी के सात उपन्यास, पृष्ठ. 98
14. अज्ञेय - नदी के द्वीप, पृष्ठ. 84
15. वही, पृष्ठ. 87
16. वही, पृष्ठ. 92

17. वही, पृष्ठ. 94

18. केदार शर्मा - अज्ञेय के उपन्यास प्रकृति और प्रस्तुति, पृष्ठ. 103

19. अज्ञेय- अपने-अपने अजनबी, पृष्ठ. 10

20. वही, पृष्ठ. 41-42

21. वही, पृष्ठ. 19-20

22. वही, पृष्ठ. 4

23. वही, पृष्ठ. 88

24. वही, पृष्ठ. 47

25. वही, पृष्ठ. 57

26. वही, पृष्ठ. 16

27. वही, पृष्ठ. 18

****